his Book belonged to
Revd Henry Perrott Parker M.A.
Trinity Coll Cambridge
[illegible] Calcutta 1878 to 1885

[illegible] to India in consequence of
[illegible] pleadings of Jani Ali
at Cambridge

[illegible]issionary at his own charge
[illegible] the Gonds of Central Provinces
of India 1885 to 1886 July

Built his own little house
at Mangalpur
44 miles from Jubbulpore C.P.
railway station
16 miles from Mandla C.P.
headquarters of the Mandla
district.

There had been an
Orphanage at Mangalpur
started by the Revd E. Champion
and some of the orphans
were settling there as
small [illegible]

M[illegible]

Sent. 1830

The book is an ordinary School boys reader published by the Christian Literature Society (then called C.V.E.S) and with Samuel son of the old Lala Thomas who had had charge of the orphan boys Mr. Parker set himself steadily to learn Hindie.

He knew a little Bengalee + Hindustanee but Hindee is the language most used throughout North and Central India

"Hindi ranks perhaps highest among the Indian vernaculars in strength and dignity" Sir Wm Hunter

The mother tongue of 50 to 80 million of people yet greatly neglected by European officials and [illegible]

... Mr Parker's writing
Character i.e. Nágari or Deva Nagari
in which Sanscrit and Hindi are
commonly written.

---

It was in Mangaipur that
Mr Parker received the call
to succeed Bishop Hannington
as Bishop of Eastern Equatorial Africa
1886
which after much prayer
and humble hesitation he
accepted on condition that
that a missionary be sent
to carry on his work among
the Gonds.
The Revd Herbert J. Molony of
Pembroke Colle. Cambridge was
ultimately sent with a
band of Associated Evangelists
but the centre changed to
Marpha 60 miles East of
Mandla in consequence of
remarkable openings in the
valley of the Burmer a
tributary of the Nerbudda river.



Bishop Parker died at 1887

HINDÍ SECOND BOOK.

# हिन्दी
## की
# दूसरी पुस्तक।




TOTAL COPIES, THIRTY THOUSAND.

PUBLISHED BY THE CHRISTIAN VERNACULAR
EDUCATION SOCIETY, ALLAHABAD;
PRINTED AT THE MISSION PRESS.

1885.

ĭ H ND Ī

K Ī

D SRI P STa K
U Ŭ

---

pronounced

= HINDEE KEE
of
DŌOSREE POOSTUK
2nd book

# HINDÍ SECOND BOOK.

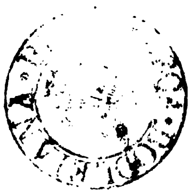
# हिन्दी
## की
# दूसरी पुस्तक।



PUBLISHED BY THE CHRISTIAN VERNACULAR EDUCATION SOCIETY, ALLAHABAD; PRINTED AT THE MISSION PRESS.

1885.

*5th Edn.*] [10,000 *Copies.*



# हिन्दी

## की

# दूसरी पुस्तक।



## १ मेरी नई पुस्तक।

देखो मेरी नई पुस्तक। मैं जानता हूं कि मुझे अच्छी लगेगी। उस में कितनी कठिन बातें तो हैं कि जिन को मैं नहीं जानता। पर जो मैं दिनबदिन दो चार सीखा करूंगा तो वे कठिन न रहेंगी।

जो मेरा समय है उस को मैं अच्छे काम में लगाऊं क्योंकि गया समय फिर हाथ नहीं आता। इस लिये मैं प्रतिदिन कोई नई बात पढ़ा और सीखा करूं और दिनबदिन अच्छा बनता चला जाऊं।

## २ चीऊंटी ।

जब मैं सड़क के किनारे बैठा था तो क्या देखा कि एक चीऊंटी किसी मरे कीड़े को खींच ले जाने चाहती है। वह तो खींचखांच कर रही थी पर बन न पड़ा क्योंकि वह मरा कीड़ा उस के लिये बड़ा और भारी था। फिर क्या करे। एक पुरानी चीऊंटी उसे लाचार देखके उस को सहारा देने को दौड़ी। इस ने भी पकड़ा और उस ने भी पकड़ा और यूं दोनों चीऊंटियां मिलके उस कीड़े को अपने बिल में ले गईं।

जैसा उस पुरानी चीऊंटी ने किया वैसा तुम भी करो। और जो पूछो कि हम क्या करें तो मैं यह कहता हूं कि औरों को सहारा देने के लिये तुम हर समय तैयार रहो। तुम काम के मनुष्य बन जाओ।

## ३ बैल ।

बैल एक बड़ा और बलवन्त पशु है। उस का मोटा चमड़ा होता है जिस के ऊपर सुफेद वा लाल वा काले बाल जमे हुए होते हैं।

बैल के खुर चिरे हुए होते हैं । उस के सिर पर दो सींग हैं । सब सींगवाले पशुओं के खुर चिरे हुए होते हैं ।



वह घास और भूसा खाता है । वह चलते चलते चरता जाता है । फिर वह खड़ा हो जाता या बैठ जाता है और बैठके खाया हुआ चारा फिर मुंह में लाके चबाता है । इस को जुगाली कहते हैं ।

बैल हल को और गाड़ी को खींचते हैं । जब गोरू बैल और और पशु हमारे ऐसे काम में आते हैं तो उचित है कि हम उन पर दया करें ।

---

४ किस ने तुम को उत्पन्न किया ।

किस ने मुझ को और सारे जगत के लोगों

को उत्पन्न किया । किस ने मुझे कान दिये कि सुनूं और आंखें दिईं कि देखूं और नाक दिई कि सूंघूं और मुंह दिया कि बोलूं और खाना खाऊं । किस ने मुझे पांव दिये कि चलूं और किस ने बुद्धि दिई कि भला बुरा जानूं और किस ने मुझ को आत्मा दिया जो कभी न मरेगा ।

परमेश्वर से मुझ को यह सब कुछ मिला । परमेश्वर मुझ को दिनबदिन जीता रखता है । जो वह मुझे जीता न रखता तो मैं मर जाता । परमेश्वर कैसा दयालु और कृपालु है । इस लिये चाहिये कि मैं उसे प्यार करूं और भला होने का यत्न करूं क्योंकि वह भी भला है ।

## ५ दो थैले ।

हर एक मनुष्य के पास दो थैले हैं । उन में से एक उस के आगे और दूसरा पीछे लटकता है । दोनों अपराध के भरे हुए हैं । पर साम्हनेवाले में औरों के अपराध भरे हैं और पीछेवाले में उस के अपने अपराध । बात यह है कि लोग अपने अपने पापों को नहीं देखते परन्तु पराये के देख लेते हैं ।

हर एक जन अपने अपने अपराधों पर सोच करे और उन्हें छोड़ने का यत्न करे । पराये के अपराधों के पकड़ने से अपना दोष पकड़ना और छोड़ना बहुत अच्छा है ।

it is better to notice one's own faults & to



## ६ मनुष्य का शरीर ।

मेरा शरीर है । उस में सिर जो है सब के ऊपर रखा हुआ है ऐसा कि सारे शरीर को चलाता है । मैं उस को ऊपर उठा सकता और नीचे झुका सकता और इधर उधर घुमा सकता हूं ।

धड़ सारे अंगों से बड़ा है । धड़ ही में कान्धे और छाती और पेट और पीठ हैं ।

ऊपरवाले अंग तो बांहें हाथ और उंगलियां

हैं। नीचेवाले अंग यह हैं अर्थात् जांघें टांगें पांव और पांवों की उंगलियां। जो मेरे हाथ न होते तो मैं कुछ काम काज नहीं कर सकता और जो मेरे पांव न होते तो मैं चल नहीं सकता पर लकड़ी के कुन्दे के समान एक जगह पड़ा रहता।



## ७ मेरी मा।

इस तसवीर में तुम क्या देखते हो। एक मा बैठी है और उस का बच्चा सोता है और वह उस बच्चे को देख रही है। तुम्हारी प्यारी

मा ने बार बार तुम्हारे लिये यही किया है। जब तुम नन्हे थे तब वह तुम्हें अपनी गोद में लिये रहती थी। जब तुम रोते थे तब वह तुम्हें दूध पिलाती या खाना खिलाती और सुलाती थी। जब तुम बीमार हुए तब वह रात दिन तुम्हारे कारण जागके तुम्हारा पालन करती रही। जब से तुम जन्मे हो तब से वह प्रतिदिन तुम्हारी भलाई करती चली आई है। तुम कभी अपनी मा के प्यार को मत भूलो। जब तक वह जीती रहे तब तक उसे प्यार करो और उस का आदरमान करो।

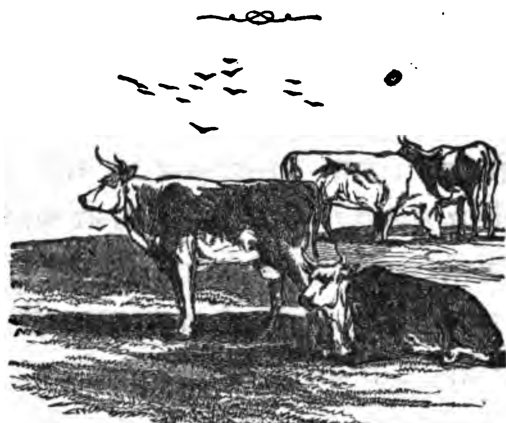
---

## ८ एक मनुष्य और उस की राजहंसनी।

कहते हैं कि किसी मनुष्य की एक राज-हंसनी थी जो प्रतिदिन एक सोने का अण्डा देती थी। पर वह मनुष्य लालची था और इस से सन्तुष्ट न हुआ। वह यह समझता था कि जो मैं उसे मार डालूं तो सब अण्डे एक साथ मुझे मिल जायेंगे। इस पर उस ने राज-हंसनी को काट डाला पर हाय हाय उस में

पकड़े न पाये । जब बेचारी राजहंसनी मर गई तब क्योंकर चौर पकड़े दे सकती ।

सन्तुष्टता बड़ा धन है ।



## ९ गाय ।

गाय डील डौल में बैल से कुछ छोटी होती और बल भी उस से थोड़ा रखती है । उस की लम्बी पूंछ होती है जिस को हिला हिलाके वह मक्खियों को हांक देती है । गाय हमें अच्छा दूध देती है और उस दूध से मक्खन और घी बनता है ।

लड़कों और स्याने लोगों को टीका देते हैं जिस्तें उन पर चेचक का रोग न आवे । अब जो टीका देने से बांह में शीतला का पानी

in the circumstance consider

डाल देते हैं सो पहिले पहिल गोधन की compose
pox
शीतला से लिया गया।

बछिया खेलने को और अपनी मा के पास कूदने उछलने को बहुत चाहती है।

हिन्दू लोग गाय को पूजा करते हैं। गाय की पूजा करना बहुत बुरी बात है। सच हम परमेश्वर का धन्यबाद करें कि उस ने दया करके एक ऐसा पशु हमें दिया कि जिस से हमारा बड़ा काम होता है पर गाय ही की पूजा नहीं परन्तु केवल परमेश्वर ही की पूजा करना उचित है।

## १० परमेश्वर ने जगत की सारी बस्तें बनाईं।

सृष्टि से पहिले न तो सूर्य्य था न चन्द्रमा था न धरती थी पर परमेश्वर ही था। पर-मेश्वर का आदि नहीं है और उस का अन्त नहीं होगा। यह संसार कि जिस में हम रहते हैं आप से आप नहीं हुआ। जैसा कि बीज में से पेड़ उपजता है वैसे यह नहीं हुआ पर परमेश्वर ने उसे सृजा। जब कुछ न होवे उस में से कुछ बनाना उस को सृजना अथवा सृष्टि करना कहते हैं। केवल परमेश्वर सिरज सकता

beginning

springs up

comes into being

है इस लिये उस को सिरजनहार अथवा सृष्टि कर्त्ता कहते हैं। जितने जीव जन्तु भूमि पर चलते हैं जितनी चिड़ियां हवा में उड़ती हैं और जितनी मछलियां पानी में तैरती हैं सब को परमेश्वर ने सिरजा। उस ने मुझ को भी बनाया।

केवल एक ही ईश्वर है वही परमेश्वर है जिस ने सारी सृष्टि को रचा है। जो कुछ हमारे पास है सो उस ही का दिया हुआ है। परमेश्वर का बड़ा महात्म है और वह बहुत दयावन्त है।



## ११ कुत्ता और बैल।

एक दिन की बात है कि एक बड़ा कुत्ता गोशाले में भूसे के ऊपर पड़ा था। कोई बैल जो बहुत भूखा था पास आके चाहता था कि

कुछ खाये पर वह बुरा कुत्ता घुर्राने और उस पर मुंह चलाने लगा। तब बैल बोला कि तू आप भूसे को खा नहीं सकता न औरों को जो खा सकते हैं खाने देता है।

कितने लोग इस कुत्ते के समान हैं जो भूसे के ऊपर पड़ा हुआ था। वे कितनी हो बस्तुन को न आप लेते हैं न दूसरों को लेने देते हैं।

---

## १२ धान के खेत।

धान के खेतों को देखो। वे कैसे हरियाले देख पड़ते हैं। धीरे धीरे जब धान पकेगा और काटे जाने के योग्य होगा तब वह भूरा हो जायगा। तब वह काटा जायगा और उस पर दांव चलाई जायगी और उस का पुआल भूसे की जगह काम में आवेगा। तब धान को ओखली में ऐसा कूटते हैं कि उस की भूसी अलग हो जाती है और उस को तब चावल कहते हैं। और जब चावल को पकाते हैं तब वह भात हो जाता है।

परमेश्वर पहिले धान को उगाता है तब उसे बढ़ाके उस में बालें निकालता और उस

में दाने डाल देता है। चाहिये कि हम अनाज के लिये उस का धन्यवाद करें।

## १३ कौन हमें देखता है।

एक लड़के ने दूसरे लड़के से पूछा कि तुम ने उन बेरों में से जो वहां पड़े थे क्यों अपने लिये कुछ न लिये। कोई तो देखता नहीं था।

दूसरे ने उत्तर दिया हां कोई देखता था। मैं आप ही था जो अपने को देखता था फिर क्या मैं अपने को कोई बुरा काम करते देख सकता हूं।

कभी कोई बुरा काम यह समझके मत करो कि कोई मुझे नहीं देखता है। पहिले तो तुम आप ही अपने को देखते हो फिर ईश्वर भी तुम को देखता है। और हम ने जो जो किया इस का एक दिन परमेश्वर को लेखा देना होगा।

## १४ बिल्ली।

बिल्ली को देखो। उस का कैसा अच्छा और कोमल बाल है। उस के दांत और पंजे बहुत नोकीले हैं। उस के पंजे उस के पांवों में हैं। वह उन के सहारे से पेड़ पर चढ़ सकती है।

जो तुम उस की पूंछ को खींचो तो वह तुम को काटेगी या नोचेगी। बिल्ली की आंखें ऐसी हैं कि वह अंधेरे में देख सकती है। इस लिये वह चूहों और चूहियों को जो रात के समय निकलें पकड़ सकती है।

जब बिल्ली प्रसन्न होती है तब घुर घुर करती है। जब भूखी होती है और खाना मांगती है तब म्यूं म्यूं करती है। एक बात जो लड़के बिल्ली से भी सीख सकते हैं सो यह है कि अपने हाथ और मुंह को साफ और सुथरा रखें।

## १५ आत्मा।

परमेश्वर ने तुम को देह दिई। तुम जानते हो कि तुम्हारी देह क्या है। अपने शरीर में जो तुम देख सकते और छू सकते हो सो तुम्हारी देह है।

फिर परमेश्वर ने तुम्हें देह से अधिक एक आत्मा भी दिया। तुम अपने आत्मा को देख नहीं सकते हो। जैसे तुम्हारी देह मांस और लहू से बनी है वैसे तुम्हारा आत्मा नहीं है। पर तुम अपने आत्मा से सोच बिचार कर सकते हो और उसी से तुम किसी से प्रेम रख सकते और जो भला अथवा बुरा है जान सकते हो।

पशुओं में केवल जीव है आत्मा नहीं है। वे ईश्वर पर ध्यान कर नहीं सकते। जब वे मर जाते हैं तब उन का जीना समाप्त हुआ फिर नहीं जीयेंगे। जब मनुष्य मर जाता तो उस की देह ही है जो मर जाती आत्मा जो है सो मरते समय देह में से निकल जाता।

आत्मा कभी नहीं मरने का। उस से बहुमूल्य और बड़ा पदार्थ हमारा कोई नहीं है।



## १६ लड़का और बादाम।

किसी मिटिया में जिस का गला छोटा था बादाम भरे हुए थे। एक लड़के ने उस में से कुछ निकाल लेने चाहा और अपना हाथ उस में डाला कि मुट्ठी भर लेवे। पर मिटिया का

गला सकेत था सो लड़का अपने बादाम से भरी हुई मुट्ठी को निकाल न सका।

किसी मनुष्य ने जिस ने थोड़ी दूर पर खड़े होके यह देखा लड़के से कहा कि बच्चा थोड़े बादाम उसी में गिरा दो तब तुम्हारी मुट्ठी छोटी हो जायगी और निकल आवेगी। लड़के ने वैसा ही किया और सहज से बादाम समेत मुट्ठी निकाल सका।

लालच बुरी बस्तु है।

---

## १७ सुगन्धी मिट्टी और गुलाब।

एक दिन किसी मित्र से सुगन्धी मिट्टी का एक टुकड़ा मेरे हाथ में आया। मैं ने उस सुगन्धी बस्तु से पूछा कि क्या तू कस्तूरी है जो मैं तेरे सुगन्ध से ऐसा आनन्दित होता हूं। उस ने उत्तर दिया कि नहीं मैं बेचारी केवल मिट्टी का एक टुकड़ा हूं पर बहुत दिनों तक जो गुलाबों के बीच में रही इस लिये गुलाब का सुगन्ध मुझ में भी आ गया। नहीं तो मेरा निज सुगन्ध कुछ नहीं है। मैं तो आप केवल निकम्मी मिट्टी हूं।

और तुम भले होने चाहो तो तुम भले लोगों की संगति करो। दोहा।

संगत ही गुण ऊपजै . संगत ही गुण जाय।
बांस फांस औ मीसरी . एकहि भाव बिकाय॥

---

## १८ नाक और मुंह।

नाक से हम सूंघते हैं। उस की दोनों ओर के छेद नथुने कहलाते हैं। कितने फूलों का अच्छा सुगन्ध होता है। मैल और कूड़े कुर्कुट से दुर्गन्ध निकलता है। उस को अपने घर से दूर रखना चाहिये।

मुंह से हम बातें करते और खाना खाते हैं। आगे के दांत धारवाले होते हैं कि उस से हम अपना खाना काट लेते हैं। और पीछे के दांत डाढ़ें कहलातीं और उन से अपना खाना पीस डालते हैं। जीभ से हम खाने का स्वाद पाते हैं।

घोड़ा हिनहिनाता है कुत्ता भूंकता है मुर्गा बांग देता है पर केवल मनुष्य ही अपने मन की चिन्ताओं को बातों से प्रगट कर सकता है। ऐसे जनों को जो बोल नहीं सकते हैं हम गूंगे कहते हैं।



## १९ भैंस ।

भैंस की भारी और मोटी देह होती है और उस की टांगें छोटी पर बलवन्त होती हैं। उस की सींगें पीछे की ओर फिरी हुई होती हैं। उस का चमड़ा काला है और उस पर थोड़े थोड़े बाल होते हैं। भैंस अपना सिर नीचे झुकाये हुए धीरे २ चलती है। पानी में अथवा कीचड़ में पड़े रहना उसे अच्छा लगता है इस लिये कि उस की देह ठंढी रहती है और मक्खी मच्छड़ उसे नहीं काटते हैं। वह घंटों तक पानी में पड़ी रहती केवल अपने सिर की चोटी और नाक को पानी के ऊपर निकाले रहती है।

हल चलाने के लिये भैंसा बड़े काम का पशु है। भैंस बहुत सा दूध देती है। इसम

के दक्खिनी खण्ड में बनैली भैंस भी होती हैं और वे जंगली और डरावनी होती हैं।

## २० मक्खी और मधु।

किसी मधु के बासन के किनारे एक मक्खी बैठ गई। वह थोड़ा थोड़ा पीने से सन्तुष्ट न हुई पर मधु के ऊपर बैठ गई कि बहुत सा पीवे।

जब पेट भर गया तब वह उड़ जाने चाहती थी पर उड़ न सकी क्योंकि उस के पैर मधु में डूब गये थे। वह अपने पैर निकालने चाहती थी पर इस से वह और भी धंस गई और धंसते धंसते डूब ही गई।

दोहा।

मक्खी बैठी शहद पर, गये पंख लपटाय।
हाथ मले औ सिर धुने, लालच बुरी बलाय॥

## २१ आज्ञा मानना।

जब तुम्हारे माता पिता अथवा शिक्षक तुम्हें अच्छे काम के लिये आज्ञा देवें तो तुरन्त मानो। ऐसा न होवे कि उन्हें फिरके आज्ञा देना पड़े। जैसा वे कहें वैसाही करो और थोड़ा

सा भी अपनी मति के समान उन की आज्ञा के बिरुद्ध मत करो। उन की बात को प्रसन्न होके माना। मुंह बिगाड़के अथवा कुड़कुड़ा बड़बड़ाके कुछ मत करो।

परमेश्वर के धर्म्मपुस्तक में यह लिखा है कि हे लड़को सब बातों में अपने २ माता पिता की आज्ञा मानो क्योंकि यह प्रभु को भावता है। जो ऐसा करो तो तुम आप ही अति आनन्दित होते जाओगे। जो लड़के अपने माता पिता की आज्ञा नहीं मानते हैं सो बार बार बुरी दशा में पड़ते हैं।

दोहा।

जो न माने बड़ों की सीख।
वह ठिकरा लेके मांगे भीख॥

## २२ परमेश्वर सब कुछ जानता है।

परमेश्वर हर जगह है। मैं उस को देख नहीं सकता क्योंकि वह आत्मा है। बरन परमात्मा है कोई ऐसा अंधेरा स्थान नहीं है कि जिस में परमेश्वर मुझे नहीं देख सकता। अंधेरी रात भी मुझ को उस की दृष्टि से छिपा

नहीं सकती है। अंधेरा और उजाला दोनों परमेश्वर के साम्हने एक समान हैं।

ईश्वर मेरे मन के भीतर भी देख सकता है। जो मेरे सोच में आवे सो वह सब जानता है। यदि मेरे मन में बुराई करने की इच्छा उपजे तो यह बुरी इच्छा भी परमेश्वर से छिप नहीं सकती। परमेश्वर महा पवित्र और धर्म्मी है और सब पाप से घिन करता है। परमेश्वर महा न्यायी है। वह धर्म्मी को धर्म्म का फल देगा और अधर्म्मी को अधर्म्म का दण्ड देगा। मैं ईश्वर से कहीं भाग नहीं सकता। उस को प्यार करना और उस की सेवा करनी उचित है।

## २३ अनाज की बालें।

एक किसान अपने छोटे लड़के को लेके अपने खेतों में गया ताकि देखे कि अनाज पकने पर है कि नहीं। लड़का बोला कि हे पिता देखिये कितनी बालें तो अपनी अपनी डांठियों पर सीधी खड़ी हैं और कितनी झुकी हुई हैं इस का क्या कारण है? मुझे ऐसा जान पड़ता है कि जो सीधी हैं उन की बड़ी मर्य्याद

है और जो झुकी हैं सो ऐसी वैसी उन के नौकर चाकर हैं।

पिता ने दो बालें तोड़के बेटे को दिखाईं और कहा कि देखो बेटे यह बाल जो दीन होके झुकी हुई थी सो दानों से भरी हुई है और दूसरी जो घमंडी होके सीधी खड़ी थी उस में दाना नहीं है।

दीन मनुष्य धन्य है।

## २४ समय।

भोर से लेके दूसरी भोर तक एक दिन होता है। अंगरेज़ लोग दिन को चौबीस घंटों में बिभाग करते हैं। एक एक घंटे के साठ साठ मिनिट और एक एक मिनिट के साठ साठ सिकंड होते हैं।

सात दिन को एक हफ़ता अथवा अठवारा कहते हैं। उस के दिन यह हैं अर्थात् रविवार वा इतवार फिर सोमवार मंगल बुध बृहस्पति अथवा बिफै शुक्र और शनीचर। फिर बहुत लोग सोमवार को पीर भी कहते हैं और बृहस्पति को जुमेरात और शुक्र को जुमः।

चार अठवारों के लगभग एक महीना होता है। फिर ५२ अठवारे अथवा ३६५ दिन का एक साल अथवा बरस होता है। साल के बारह महीने ये हैं अर्थात् जनवरी फरवरी मार्च अपरैल मई जून जुलाई अगस्त सितम्बर अकतोबर नवंबर और दिसंबर।



२५ लड़की और तोता।

इस तसवीर में देखो कि एक लड़की पढ़ रही है। वह अपनी पुस्तक को हाथ में थाम रही है और उस के पास एक तोता अपने अड्डे पर बैठा है। कितने तोते आदमियों की बोली सीख सकते हैं। क्या कोई उन को पढ़ना लिखना सिखा सकता? नहीं। वे पुस्तक पढ़ना

क्यों नहीं सीख सकते हैं ? उन में आत्मा नहीं है केवल वह जिन में आत्मा है अर्थात् पुरुष स्त्रियां लड़के लड़कियां पुस्तक पढ़ना सीख सकते हैं। तोते बातें बोल तो सकते हैं परन्तु उन का अर्थ नहीं समझते। मुझे बताओ कि कौन कभी कभी तोतों के समान होते हैं।

जो लड़के पढ़ते और अर्थ नहीं जानते सो तोतों के समान हैं। समझके पढ़ा करो।

## २६ लोमड़ी और अंगूर के गुच्छे।

एक भूखी लोमड़ी ने एक अंगूर का पेड़ देखा कि जिस की एक डाली में बड़े गुच्छे लगे थे। उस ने कहा कि अहा यह कैसे सुन्दर देख पड़ते हैं। उन को खाके देखूं कि कैसे मीठे हैं।

तब लोमड़ी इधर उधर उछलने कूदने लगी पर उन गुच्छों तक पहुंच न सकी। लाचार होके बोली जो चाहे सो उन्हें ले मेरी समझ में वे खाने में अच्छे न होंगे खट्टे होंगे। यह कहके और उदास निरास होके चली गई।

बार२ ऐसा होता है कि जब लोग कोई पदार्थ पा सकते हैं तो उस को अच्छा कहते हैं फिर जब पा नहीं सकते तब उस को बुरा ठहराते हैं।



## २७ कुत्ता ।

घर की चौकसी के लिये कुत्ता बड़े काम का पशु है। जो रात में चोर घर के पास आवे तो वह बहुत भूंकता है। वह तो बातें कर नहीं सकता पर जब वह चोर को देखके भूंकता है तो हम जानते हैं कि वह क्यों भूंकता है। मानो यह कहने चाहता है कि अरे तू कौन है और यहां पर काहे को आया तुम लोग जो घर के भीतर हो बाहर आके देखो कि यह कौन है।

जब कुत्ता किसी को देखके प्रसन्न होता है तो वह आनन्दित होके उछलता कूदता है। यदि वह तुम को रोटी खाते देखता है और कुछ चाहता है तो जानता है कि कैसे

मांगे। वह रोटी पर आंख लगाता फिर तुम्हारी ओर देखता और पूंछ हिलाता है और उस का अर्थ यह है कि मुझे भी कुछ दो। कितने कुत्ते अपने स्वामी को यहां तक चाहते हैं कि उन को बचाने के लिये मर भी जाते हैं। कुत्तों पर दया किया करो।



## २८ हमारे पहिले मा बाप।

पहिले पुरुष का नाम जिसे परमेश्वर ने सृजा आदम था। परमेश्वर ने उसे मिट्टी से बनाया। आदम तब पवित्र और आनन्दित था। फिर परमेश्वर ने पहिली स्त्री जिस का नाम हव्वा था बनाई। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को एक सुन्दर बारी में रखा।

परन्तु हमारे पहिले माता पिता ने जैसा परमेश्वर ने उन्हें करने को कहा था वैसा नहीं

किया । तब वे परमेश्वर से डरने लगे और चाहा कि आप को परमेश्वर से बारी में छिपावें । परमेश्वर ने उन से कहा कि तुम्हारी देह मर जायगी और उस ने उन्हें बारी में से निकाल दिया । अब आदम और हव्वा पवित्र न रहे पर पापी हो गये और उन के सन्तान जैसे मा बाप का मन अपवित्र था वैसे वे भी पापी होके उत्पन्न हुए और होते जाते हैं ।



२९ उकाब और छोटा लड़का ।

उकाब एक बड़ी चिड़िया है । वह चील के समान है पर उस से बहुत बड़ी है और पहाड़ी देशों में रहती है ।

एक दिन की बात है कि किसी स्त्री ने

अपने छोटे बच्चे को अकेला छोड़ा था । थोड़ी देर पीछे एक उकाब ने हवा में से झपट करके उस नन्हे बच्चे को उठा लिया और लेकर उड़ गया । हाय हाय वह छोटा लड़का कितना चिल्लाया होगा जब उकाब ने उस को आकाश में उठाया और उस को लेके ऊंचे पहाड़ पर उड़ गया कि उसे अपने घोंसले में डाले ।

उकाब ने इस कारण उस छोटे लड़के को उठा लिया कि वह आप और उस के बच्चे उस को नोच नोचके खावें । क्या उसे फाड़ने और नोचने पाया ? नहीं पाया । चार पुरुष जो उकाब के घोंसले की राह पहाड़ में जानते थे जल्दी से चढ़ गये और घोंसले के पास पहुंचके जो भीतर देखा तो क्या देखा कि वह लड़का जीता जागता है और उकाब और उस के बच्चों ने उसे कहीं छूआ भी नहीं था । वे पुरुष कैसे मगन हुए । लड़के को लेके वे पहाड़ से उतर आये और बड़े आनन्द से उस को उस की मा के पास पहुंचाया ।



## ३० आंख ।

मनुष्य की देह में आंख खिड़की के समान है । यद्यपि आंख छोटी है तथापि बड़ी बड़ी बातें देखती है । वह मुंह पर छोटे से खोखले में जड़ी हुई है । यह खोखला चारों ओर हड्डी से घेरा है और उस के ऊपर धनुष के समान भौं होती है । पपोटे ठीक छोटे ढकनों के समान हैं जिन से आंख में धूल और अधिक ज्योति नहीं पड़ती । जो वस्तु आंख को दुःख देवे उस के दूर करने के लिये बरौनी काम आती है । परमेश्वर ने जो हमें देखने की शक्ति दिई सो बड़ा पदार्थ है । जो लोग देख नहीं सकते उन को अन्धे कहते हैं । उन पर बड़ी दया किया चाहिये । अन्धे लोग पढ़ना भी सीख सकते हैं । उन के लिये ऐसे मोटे उठे हुए अक्षर कागज पर छापते हैं कि जिन को वे उंगली लगाके जान लेते और पढ़ते हैं ।



## ३१ सच बोलो ।

सब लड़के लड़कियां कभी २ बुरा करते हैं । पर कितने ऐसे हैं जो सच बोलते हैं और कितने हैं जो झूठ बोलते हैं ।

जब किसी लड़के ने ऐसा काम किया जो अच्छा नहीं है तो उसे क्या करना उचित है । सब से अच्छी बात यह होगी कि झट जावे और सच बोलके अपने अपराध को मान लेवे । इस से लोग यह जानेंगे कि यह लड़का सच्चा है और वह सच बोलता है उस की बातों पर हम भरोसा रख सकते हैं ।

अपने अपराध को छिपाने के लिये झूठ बोलना बुरी बात है । पीछे बातें खुल जायेंगी । धर्म्मपुस्तक में लिखा है कि झूठी जीभ पल भर की है । सच बोलने से परमेश्वर रीझता है । जो सत्य बातें बोलते और सत्य कार्य्य करते हैं उन से वह प्रसन्न होता है । सब झूठे लोगों का भाग आग की झील में होगा ।

## ३२ कौवा और हंस ।

एक कौवे ने एक हंस को देखा कि कैसा



सुन्दर है और उस के पर सुफेद हैं पर मेरे पर सब काले हैं। वह चाहता था कि मेरे पर हंस के पर के बराबर सुफेद होवें। हंस को झील पर पैरते हुए देखके वह समझता था कि जो मैं झील के तीर पर रहूं और अपने परों को धोया करूं तो मैं भी सुफेद हो जाऊंगा। इस लिये वह दूसरे कौवों को छोड़के एक झील के पास जा रहा और दिनबदिन अपने परों को धोया किया जब तक वह थक न गया।

जब एक महीना बीत गया तब कौवे ने देखा कि मैं काला ही काला रहा हूं। और जो धोने में लगे रहने के कारण वह थोड़ा चारा खाया करता था तो वह बहुत दुबला हो गया और अन्त में मर गया। हम अपने जाती स्वभाव को बदल नहीं सकते हैं। जहां ईश्वर हमें रखे उस में रहने पर हम सन्तोष करें। जो

उस ने नहीं चाहा कि हम होवें से हमें भी चाहना उचित नहीं है ।



## ३३ मुर्गी ।

मुर्गी बड़े धीरज से अपने अंडों को सेवती है । जब तक बच्चे छिलके तोड़के अंडे से न निकलें तब तक वह रात दिन उन पर बैठके उन्हें गरम रखती है । तब वे एक एक करके निकल आते और इधर उधर दौड़ने लगते हैं । पर वह जल्दी से अपनी मा के पास लौट आते हैं और वह उन्हें अपने परों तले छिपाती है । वह कुड़ कुड़ करके उन्हें एकट्ठा रखती है और वे उस के साथ साथ फिरते हैं । और जहां वह खरोचके दाना अथवा और कुछ

निकालती है वहां बच्चे आके चुग लेते हैं । जब वह चील को आते देखती है तो भयमान होकर कर्र करके बोलती है और जल्द बच्चे उस के परों के नीचे छिप जाते हैं ।

जो सब लड़के और लड़कियां उन बच्चों के समान अपने माता पिता की बात को फुरती से मानते तो क्या अच्छा होता ।

## ३४ पाप क्या है ।

पाप दो प्रकार से होता है । एक तो उन कामों के करने से जिन को परमेश्वर ने बर्जा है और दूसरे उन कामों के न करने से जिन की उस ने आज्ञा दिई है । दोनों बातें पाप हैं । परमेश्वर ने अपने धर्म्मपुस्तक में जिस को बैबल कहते हैं हमें यह बता दिया कि हमें क्या करना उचित है । और जो हम उस की आज्ञाओं को पालन न करें तो पापी ठहरते हैं ।

भांति भांति के बहुत पाप हैं । जो हम झूठ बोलें अथवा बुरी बातें कहें वा झगड़ा और लड़ाई करें वा छल बल अथवा चोरी करें तो यह सब पाप है । जब हम किसी पर क्रोध करें अथवा किसी से बैर रखें तो वह भी

पाप है। यदि हम परमेश्वर को प्यार न करें अथवा उस की सेवा और पूजा न करें तो बुरा करते हैं। ये सब बातें पाप हैं। वह हमारे बुरे कामों को देखता और हमारी बुरी बातों को सुनता और हमारे मन के भीतर की सब बुरी चिन्ताओं को जानता है।

धर्म्मपुस्तक में लिखा है कि सारे मनुष्यों ने पाप किया है।

## ३५ दो कुत्तों की कथा।

दो कुत्ते टीपू और गेंदा नामे कहीं फिरने गये। टीपू तो अच्छा कुत्ता था पर गेंदा बड़ा चिड़चिड़ा था। वे चलते २ एक गांव में पहुंचे। वहां के सारे कुत्ते उन के पास आये। टीपू तो चुपचाप रहा और किसी से न बोला। पर गेंदा ने एक पर दांत खोंसयाये दूसरे पर गुर्राया और तीसरे को काट खाया। इस से गांव के सब कुत्ते उस पर रिसिया गये और उस पर झपटके उस को तोड़ डाला। फिर बेचारा टीपू भी जो अच्छा कुत्ता था उस के साथ होने के कारण पकड़ा और तोड़ा गया।

तुम बुरे लड़कों और लड़कियों की संगति मत करो न हो कि उन की सी बुरी दशा तुम्हारी भी होवे।

## ३६ केले का पेड़।

यह पेड़ बहुधा आसिया आफ्रिका और अमेरिका महाद्वीपों के गरम देशों में होता है। ऐसे कोमल और सुन्दर और लंबे पत्ते उस की चोटी में से निकलते हैं जैसे और किसी पेड़ में नहीं होते हैं। उस में से केले की फलियों का एक बड़ा गुच्छा निकलता है जिस को घौद कहते हैं।

कहते हैं कि ऐसा कोई दूसरा छोटा पेड़ नहीं है जिस में इतने बहुत फल लगें।

हिन्दुस्तान में केलों को ऐसा भी खाते हैं और कच्चे फलों की तरकारी भी बनाते हैं। अमेरिका के किसी किसी देश में केलों को अपना निज भोजन बनाते हैं। वहां के लोग उन्हें धूप में सुखाके पानी में उबालते और ओखली में कूटके आटा बना लेते हैं।

केलों के डंठलों और पत्तों के रेशों से रस्सी भी बनाते हैं।




३७ गधा और खच्चर ।

एक खच्चर पर नोन की गोन थी और एक गधे पर रूई का बोरा था । दोनों को किसी नाले के पार जाना पड़ा खच्चर की गोन पानी में भीग गई । बहुत नोन पानी में पिघल गया और बोझ हलका हुआ । चलते चलते उस ने गधे से कहा कि देखो पानी से होके जो मैं निकला तो मेरा बोझ बहुत हलका हो गया । गधे ने समझा कि जो मैं भी ऐसा करूंगा तो मेरा भी बोझ हलका होगा । जब दूसरे नाले में पहुंचे तो वह पानी में पैठ गया । इस से उस की रूई भीगके ऐसी भारी हो गई कि वह बैठ गया और फिर उठ न सका ।

जो एक के लिये अच्छा है सो क्या जाने दूसरे के लिये बुरा ठहरेगा ।

## ३८ रुपैया ।

किसी लड़के ने एक रुपैया भूमि पर पड़ा देखा । उस ने उसे उठाके कहा कि मैं उसे रखूंगा क्योंकि कोई नहीं जानता है कि मैं ने पाया । तब धर्म्मपुस्तक का एक बचन जो उस ने स्कूल में सीखा था उस की सुरत में आया । सो यह था हे परमेश्वर तू मुझे देखता है । इस से उस का मन जाग गया और वह उस मनुष्य को जिस से वह रुपैया खोया था ढूंढ़ने लगा । वह एक निर्धन मनुष्य का रुपैया था वह किसी का धारता था और उसे देने को जाता था पर मार्ग में खो दिया । लड़के ने वह रुपैया उसे दे दिया । और वह बहुत आनन्दित हुआ ।

जो हम किसी दूसरे मनुष्य की कोई बस्तु पावें जो उस से खो गई तो उचित है कि उस के मालिक को ढूंढ़ें । जो तुम्हारा एक रुपैया गिर जावे और कोई दूसरा उसे पाके

रख लेवे तो यह तुम को अच्छा न लगेगा।
धर्म्म से चलना रुपैया लेने से अच्छा है।



## ३९ उल्लू।

उल्लू एक चिड़िया है। उस की आंखें गोल और बड़ी होती हैं और चोंच छोटी और मोटी होती है। दिन को उसे भली भांति दिखाई नहीं देता पर सांझ को जब सूर्य्य डूब जाता है तब भली प्रकार से देखता और अपने आहार के खोज में निकलता है। जब वह उड़ता है तब उस के पंखों की बहुत आहट सुनाई नहीं देती। वह चुहियों को मारकर खाता और कभी कभी चमगादड़ और मेंडक को मार लेता है। उल्लू बड़े काम की चिड़िया है क्योंकि जैसे बिल्ली घरों में वैसे उल्लू खेतों में चुहियों को पकड़कर खाता है।

उल्लू हू हू अथवा घुर घुर करता है। उस का बोलना कुछ बुरे सगुन का चिन्ह नहीं है।

## ४० मुक्तिदाता।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि मैं अपना बेटा जगत में भेजूंगा कि वह मनुष्यों को मुक्ति के लिये अपना प्राण देवे। परमेश्वर का बेटा जन्म लेके छोटा लड़का बना और उस का नाम ईसा रखा गया। ईसा नाम का अर्थ है मुक्तिदाता।

जब ईसा मसीह बड़ा हुआ तब धर्म्मोपदेश करता फिरा। वह अन्धों की आंखें भी खोला करता था। वह रोगियों को चंगा करता था। कितनों को जो मर गये थे उस ने फिर जिलाया।

ईसा ने क्रूश पर अपनी जान दिई जिस्तें हमारी जान को नरक से बचावे। वह कबर में रखा गया पर तीसरे दिन वह फिर जी उठा। वह पीछे स्वर्ग को चढ़ गया। अब वह वहां है। जो हम उसे प्यार करेंगे तो एक दिन उस को स्वर्ग में देखेंगे और उस के संग सदा लों आनन्द करेंगे।



## ४१ गिरा हुआ घोंसला ।

एक अबाबील ने अपना घोंसला किसी खिड़की के एक कोने में बनाया । एक दिन ऐसा हुआ कि जब बहुत पानी बरसा तब घोंसले की मिट्टी भीगके फूल गई और वह दीवार से छूटके गिर पड़ा । बेचारा अबाबील चिल्लाके उड़ गया ।

थोड़ी देर में बहुत से अबाबीलों का एक झुंड उस खिड़की के पास आया । पहिले जगह को देखा भाला फिर सब ने मिलके अपने मित्र के लिये नया घोंसला बनाया ।

जब और लोग दुःख में हों तब उन को सहारा देने को हम नित्य तैयार रहें ।





## ४२ कान ।

जैसा आंखों से हम देखते वैसा हम कानों से सुनते हैं। कान बड़ी अद्भुत रीति से बनाये गये ऐसा कि इधर और उधर की आहटें मिलकर उस में एकट्ठी हो जाती हैं।

ऐसे लोगों को जो सुन नहीं सकते बहिरा कहते हैं। कितने लोग बहिरे और गूंगे दोनों होते हैं। फिर भी बहिरों और गूंगों को पढ़ना सिखाया जा सकता है। वे गूंगे बहिरे अपनी उंगलियों के मिलाने से नाना प्रकार के अक्षरों के चिन्ह बनाके बोलते हैं।

मनुष्य अपनी आंखों से देखता अपने कानों से सुनता अपनी नाक से सूंघता अपने मुंह से स्वाद लेता है और अपनी सारी देह से जान बूझ सकता है कि गरम और ठंढा नरम और कड़ा इत्यादि क्या है। सो मनुष्य के पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं अर्थात् जिस से देखता सुनता सूंघता स्वाद लेता और स्पर्श करता।

हमारे कान तो दो हैं पर जीभ केवल एक है। सो हम बोलने से अधिक सुना करें।



## ४३ मेंडकी और बैल।

एक मेंडकी ने अपनी मा से कहा कि माता जी मैं ने मैदान में एक बड़े बैल को चरते देखा। उस की मा ने अपने को जहां तक हो सका बढ़ाके पूछा क्या इतना बड़ा था? बच्चे ने उत्तर दिया कि हे माता इस से कहीं बड़ा। मां ने अपने पेट को और भी फुलाके पूछा कि बच्चा क्या इतना बड़ा था? मेंडकी ने कहा कि मा तुम अपने को कहां तक फुलाके मोटा कर सकोगी तुम कभी बैल के बराबर न होगी। जो तुम बढ़ते बढ़ते मर भी जाओ तौभी तुम थोड़ा सा भी उस के बराबर नहीं हो सकती हो। बड़ी मेंडकी इस बात को सुनके चिढ़ गई और अपने को और भी बढ़ाने चाहा पर हाय पेट फटकर रह गई।

घमंड और अहंकार बहुतों को नाश करता है।

---

## ४४ सदा सच बोला करो।

किसी स्त्री ने अपने छोटे बेटे को दूध लाने भेजा। उस के भाई ने उस के पीछे दौड़के चाहा कि मिटिया को उस के हाथ से छीन लेवे। लड़के ने मिटिया को हाथ में संभालके थांभ लिया पर अन्त में दूसरे के छेड़ने से वह गिरी और टूट गई। जब वह लड़का रो रहा था एक स्त्री ने उस से कहा क्यों रोते हो तुम अपनी मा से बोलो कि ग्वाले ने मिटिया को तोड़ दिया। लड़के ने उत्तर दिया कि नहीं क्या मैं झूठ बोलूं? मैं सच बोलूंगा। जो मेरी मा मुझे मारे भी तौभी मैं झूठ न बोलूंगा।

इस छोटे शीलवान लड़के के समान हम हर समय सच सच बोला करें। जिस को लोग सच्चा जानते हैं उस को वे मानते और उस की बातें पतियाते हैं।

---

## ४५ कौवा।

इस कौवे की तसवीर को देखो। वह काली



काली चिड़िया है। आहा देखो वह कैसा काला है। वह बहुत ढीठ है और किसी न-किसी जुगत में नित्य लगा रहता है। वह हर जगह फुदकता फिरता और कुत्तों और मुर्गियों को धोखा दिया करता है। जहां औसर पाता वहां रोटी या और कोई खाने की बस्तु को झपट लेता और कभी कभी छोटे लड़कों के हाथ से भी रोटी छीन ले जाता है।

कौवे अपने घोंसले पेड़ों पर बनाते हैं। भोर को पौ फटने के समय वे कां कां करने लगते हैं। कौवों के बच्चे आहार के लिये चिल्लाते हैं और परमेश्वर उन के मा बाप से उन को खाना खिलवाता है। जो हम अपने स्वर्गीय पिता की

बात के। मानें ते। वह कितना अधिक करके जो हमारे लिये अवश्य है हमें क्यों न देगा ।

## ४६ मुक्ति पाने का मार्ग ।

जब हम इस जगत से जाते रहें ते। किस रीति से स्वर्ग में प्रवेश करें। कितने लोग समझते हैं कि हम दान पुण्य करने से या क्रिया कर्म करने से मुक्ति को प्राप्त होंगे ।

परन्तु अपने कर्म्म धर्म्म से हम कभी बैकुण्ठ को प्राप्त नहीं होंगे क्योंकि हमारे सारे पुण्य और धर्म्म में पाप भी मिला हुआ है और ऐसा पुण्य और धर्म्म परमेश्वर के घर में नहीं चलने का ।

मुक्ति का एक सच्चा मार्ग है सो केवल प्रभु ईसा मसीह के द्वारा से है। वही अकेला मुक्ति-दाता है। उस पर बिश्वास करो उस ही से प्रेम रखो। उसके द्वारा से परमेश्वर तुम्हारे सारे पापों को क्षमा करेगा। वह अपने पवित्रात्मा को भेजेगा जो तुम्हारे मन को नया करेगा और मुक्ति का भेद तुम पर खोलेगा ।

जो पवित्रात्मा की सहायता से तुम ईसा के पास आओ तो वह तुम्हें पाप से और नरक

से बचाके मुक्ति देगा। इस लिये उस की दुहाई देके कहो कि हे प्रेमी मुक्तिदाता ईसा मसीह मेरे सारे पापों का बोझ उतारिये और मेरे आत्मा का त्राण कीजिये।



## ४७ घास और गुलाब।

जब मैं ने देखा कि गुलाबों का एक सुन्दर गुच्छा घास ही से बंधा हुआ था तो मैं ने पूछा कि इन सुन्दर सुन्दर गुलाबों के साथ यह निकम्मी घास क्यों पाई जावे।

घास इस को सुनके रो पड़ी और बोल उठी कि चुप रहिये। जो दयावान् हैं सो अपने पुराने संगियों को भूल नहीं जाते। सच मेरा न सुन्दर रंग रूप है न गन्ध सुगन्ध है पर मैं भी प्रभु की बारी में उपजी हूं। मैं भी प्रभु की दासी हूं और उस की कृपा से मैं पलती हूं।

मैं अपने आप में कुछ नहीं हूं पर उस की कृपा पर मेरा भरोसा है।

तुम छोटे से छोटे को तुच्छ न जाने। सारे मनुष्य एक ही माहात्मिक परमेश्वर को जो स्वर्ग में है सन्तान हैं।



## ४८ बिल्ली का बच्चा।

बिल्ली के बच्चे को देखो। तसवीर में देखो कि उस के गले में एक डोरी बंधी हुई है और वह एक गेंद से खेल रही है।

जैसे लड़के वैसे बिल्ली के बच्चे भी खेलना कूदना चाहते हैं। बिल्लियां तो दिन भर खेलती फिरें और सोती रहें क्योंकि उन को स्कूल में जाके पढ़ना नहीं है। पर लड़के बिल्ली के समान दिन भर न खेला करें पर पढ़ना लिखना और हिसाब करना भी सीखें।

पर लड़के कुछ कुछ खेलें भी। इस से वे देह के पोढे और बलवन्त होते हैं। लड़के

कब खेला करें? दिन भर तो नहीं पर जब स्कूल का काम हो चुके तब खेलें। इतना वे न खेलें कि अपने पाठ ही को भूल जावें।

## ४९ पेड़।

पेड़ को देखो। उस की जड़ भूमि के भीतर दूर तक नीचे चली जाती है। उन्हीं के बल से पेड़ खड़ा रहता है, नहीं तो गिर जाता। जड़ों के सिरे महीन महीन हैं और वे भूमि के भीतर का पानी चूस लेते हैं और वह पेड़ में फैल जाता है और उसी से वह हरा रहता और बढ़ता जाता है।

पेड़ का जो गोल और मोटा भाग जड़ के ऊपर होता है उस को स्तम्ब कहते हैं। उस के बाहर छाल होती है ऊपर डालियां फैली रहती हैं जिन में पत्ते फूल और फल लगते हैं।

नाना प्रकार के पेड़ होते हैं जैसा कि आम के पेड़ और शीशम और बरगत और पीपल और सिरस इत्यादि बहुत और भी हैं। कितने पेड़ों में अच्छे फल लगते हैं। और कितने पेड़ों की लकड़ी कड़ियों और तख़्तों के काम में आती है। और कितने केवल ईंधन ही के काम के हैं।



५० लालची कुत्ता ।

एक कुत्ता कहीं से एक टुकड़ा गोश्त चुरा ले गया था और एक नदी के पास आया जिस के पार जाना था । जब नदी के बीच तक पहुंचा तो उस ने पानी में अपनी परछाईं देखी । उस ने समझा कि यह तो एक दूसरा कुत्ता है कि जिस के भी मुंह में गोश्त का टुकड़ा है । वह उस की ओर झपटा कि उस से छीन ले । पर जब उस ने उसे लेने को मुंह खोला तो वह टुकड़ा भी जो उस के पास था गिर पड़ा और पानी में डूब गया । और यह उस के लालच का फल हुआ कि सब ही जाता रहा ।

लालची लोग जो अपने माल से अधिक लेना चाहते हैं सो बार बार सब कुछ खो देते हैं ।

आधी को छोड़ एक को धावे।
एक न पाय आधी भी जावे॥

## ५१ हिन्दुस्तान।

यह हिन्दुस्तान का देश जिस में हम रहते हैं एक बहुत बड़ा देश है। उस में ऊंचे ऊंचे पहाड़ और बड़ी २ नदियां हैं। और उस में बहुत लोग रहते हैं।

कलकत्ता जो हिन्दुस्तान का राजनगर है सो पूरब की ओर बंगाले में है। वह एक नदी पर है। बंबई भी बड़ा नगर पर उस से थोड़ा छोटा है। वह पच्छिम की ओर समुद्र के तीर पर है और जहाजों का एक बंदर है। मन्दराज दक्खिनी हिन्दुस्तान के नगरों में बड़ा नगर पूरब की ओर समुद्र के तीर पर है। अंगरेज़ देश की महारानी हिन्दुस्तान देश की कैसर वा अधिरानी है।

लंका टापू जिस का नाम सिंहलद्वीप भी है सो दक्खिन में हिन्दुस्तान के पास एक टापू है। टापू वह भूमि है जिस को चारों ओर पानी होता है।

## ५२ अच्छा उत्तर ।

एक जगह में बहुत सी लड़कियां एकट्ठी थीं। किसी ने उन से पूछा कि ऐसी कोई वस्तु है जो ईश्वर की ओर से न होवे ? एक छोटी लड़की ने जो पांच बरस की थी यह उत्तर दिया कि हां साहब पाप है वह परमेश्वर की ओर से नहीं है।

लड़की की बात ठीक थी। कितने लोग ऐसे हैं जो अपनी बुराई को ढांकने के लिये कहते हैं कि पाप भी परमेश्वर से है। कहते हैं जो भला बुरा हमारे कर्म्म में लिखा है सो ही हम करते हैं। पर कर्म्म की बात जो मानते हैं सो झूठी है। परमेश्वर कर्म्म नहीं लिखता है और कर्म्म कुछ वस्तु है ही नहीं। फिर पाप करना परमेश्वर क्योंकर कर्म्म में लिख सकता है। जब हम पाप करते हैं तो हम ही करते हैं। परमेश्वर करवाता नहीं है। यदि किसी बुरे बेटे का धर्म्मी दयावान और ज्ञानवान पिता हो और वह बुरा बेटा अपनी बुराई का दोष अपने ऐसे पिता पर डाले तो कौन मानेगा पर लड़के ही की दुगनी बुराई होगी। वैसा ही जो कोई पाप करे और कहे कि पाप और पुण्य

दोनों हो परमेश्वर से हैं सो बड़ा झूठा और दोषो है ।

## ५३ आज्ञाकारी लड़का ।

एक लड़का अपनी ननिहाल को गया और वहां के लोगों ने मिठाई उस के आगे रखी कि खावे पर उस ने नहीं लिई । उन्हों ने पूछा कि तुम क्यों नहीं खाते हो ? उत्तर दिया मैं तो मिठाई को बहुत चाहता हूं पर मेरे माता पिता ने मुझे आज्ञा दिई कि तुम मत खाओ । तब उन्हों ने कहा कि तुम्हारे माता पिता तो बहुत दूर हैं और न जानेंगे । लड़के ने अच्छा उत्तर दिया कि जो कुछ मेरे माता पिता ने मुझ से कहा कि करूं वा न करूं सो मैं निश्चय मानूंगा । यद्यपि मैं जानता कि कोई मुझे वह मिठाई खाते न देखेगा और कोई न जानेगा तौभी मैं उसे नहीं छूऊंगा । मैं आप ही तो जानूंगा कि खाई और इस से मेरे मन में कांटा गड़ता रहेगा ।

लड़कों को उचित है कि जैसा वह अपने मा बाप की आंखों के साम्हने उन की आज्ञा मानते हैं वैसा ही उन के पीछे भी मानें ।



## ५४ लड़कियों का स्कूल ।

देखो तसवीर में कैसी अच्छी छोटी लड़की खड़ी है। उस के हाथ में पुस्तक है। मैं जानता हूं कि वह स्कूल को जाती होगी ।

जैसे लड़के वैसे लड़कियां भी पढ़ना सीखें। दोनों में आत्मा है जो कभी न मरेगा। दोनों को सिखाया चाहिये कि भला क्या है और बुरा क्या है। दोनों को उचित है कि परमेश्वर को धर्म्मपुस्तक को पढ़ सकें। फिर जो माएं पढ़ी हुई हों तो वह यह भी जान सकती हैं कि अपने लड़के लड़कियों को अच्छी रीति से शील स्वभाव सिखावें और उन्हें बहुत सी बातों की शिक्षा देवें। जब तक किसी देश की सब स्त्रियां पढ़ी हुई न हों तब तक उस देश के लोग

प्रश्रय well off

सचमुच सुखी और भाग्यमान् और शुभगतिक हो नहीं सकते हैं।

यदि तुम्हारी बहिनें हों तो उन को समझाओ कि स्कूल में जाके पढ़ें। और जो ऐसा न हो सके तो तुम उन को अपने ही घर में पढ़ाओ वा पढ़वाओ। उन के लिये पुस्तक लाओ और प्रतिदिन उन को एक एक पाठ सिखाते रहो जब तक वे अच्छी रीति से पढ़ न सकें। पर सब से अच्छा यह है कि उन को स्कूल में भेजो कि वहां सीखें।

Mushes - reed

## ५५ आम का पेड़ और सरकंडा।

एक आम के पेड़ ने किसी सरकंडे से कहा कि मुझे देखो कि मैं कैसा पोढ़ा हूं और कैसा दृढ़ होके खड़ा रहता हूं। चाहे कैसी हो आंधी चले पर वह मुझे हिला नहीं सकती और तुम बेचारे छोटे निर्बल सरकंडे थोड़ी ही सी हवा में झुक जाते हो।

तब एक बड़ी आंधी आई। आंधी ने आम के पेड़ को जड़ से उखाड़ डाला और वह भूमि पर लाचार पड़ा रहा। सरकंडा आंधी के झोंके से झुक तो गया पर जब आंधी थम

गई तब वह फिर उठा और ठीक ठाक खड़ा हो गया।

नाश होने से पहिले अहंकार और गिर पड़ने से आगे मन में घमंड आता है।

## ५६ दस्तूर की बात।

बहुत से लोग इस देश में दस्तूर की बात की चर्चा करते हैं। कहते हैं कि हम ऐसा करते हैं क्योंकि यह हमारा दस्तूर है। और वैसा नहीं करते हैं क्योंकि वह हमारा दस्तूर नहीं है। यह तो ऐसा है कि जैसा बहुत सी भेड़ियों में से अगली भेड़ी कूए में कूद पड़े तो सब भेड़ियां भेड़ियाधसान करके उस के पीछे कूदती जाती हैं। उन में तो बुद्धि नहीं है। पर परमेश्वर ने मनुष्य को बुद्धि दिई और उसे चैतन्य बनाया ताकि वह सोच बिचार करे कि जैसा और लोग करते हैं वैसा हम भी भेड़ियाधसान करके करें अथवा न करें।

जो हम किसी गांव में बसने को आवें और उस गांव के लोग बहुत ही मैले कुचैले हों तो क्या हम उन के दस्तूर पर मैले कुचैले बन जावें? जो वे झूठी बातें बोला करें तो क्या हम

भी सच न बोलें। जो वे पत्थर की पूजा करें तो क्या हम भी ऐसे निर्बुद्धि होके पत्थर की पूजा करें अथवा सत्य परमेश्वर की।

हमें उचित है कि परम्परा और दस्तूर की बात के बिषय में बिचार करें कि वह अच्छी बात है अथवा बुरी। जो अच्छी हो उसे हम ग्रहण करें। जो बुरी हो उसे हम छोड़ देवें।



५७ बत्तक।

बत्तक की लंबी और चौड़ी चोंच होती है। वह पानी में तैरती और अपनी चोंच से कीड़े मकोड़ों को और जो कुछ अपने खाने के योग्य पाती है खा लेती है। बत्तक के पांव दूसरी चिड़ियों के ऐसे नहीं हैं पर बहुत पीछे को हटे हुए हैं। इसी से वे अच्छी रीति से तैर सकती हैं पर चलने में वे डगमगाती हैं। उन

की उंगलियों के बीच में एक चमड़ा है जो उन के पैरने के लिये बहुत काम का है। उस को वस्लपा कहते हैं। बत्तक के पर कुछ कुछ चिकने होते हैं और उसी से पानी उन में नहीं पैठता है। जब बत्तक अपने बच्चों को बुलाती है तब वे उस के पास दौड़े आते हैं। वे बच्चे भी पैरने और डुबकी मारने से प्रसन्न होते हैं।



## ५८ प्रार्थना करना।

तुम अपने मा बाप से खाना कपड़ा और दूसरी बस्तें मांगते हो। जब वह तुम को देते हैं तो तुम उन को सलाम करते हो और उन की कृपा के कारण उन से प्रेम रखते हो।

प्रार्थना करना क्या है? जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम परमेश्वर से बातें करते हैं।

ग्रीर जो कुछ हमें अवश्य है उसे कह देते ग्रीर उस से आशीष ग्रीर जो कुछ हमारे लिये अच्छा है मांगते हैं।

तुम दिनबदिन प्रातःकाल में परमेश्वर से यह प्रार्थना करो। कि हे परमेश्वर आजके दिन तू मेरी रक्षा कर। ग्रीर सांझ के समय यह प्रार्थना करो कि हे परमेश्वर जो कुछ मैं ने आज बुरा किया है सो क्षमा कर ग्रीर इस रात में तू हमारी रखवाली कर। फिर हम न केवल अपने लिये पर अपने नाते गोते ग्रीर भाई बन्धु ग्रीर सारे जगत के लोगों के लिये भी परमेश्वर से प्रार्थना करें। फिर जो कुछ हम प्रार्थना करके परमेश्वर से मांगें सो प्रभु ईसा मसीह के नाम से मांगें। ग्रीर जो प्रार्थना कर चुके तो पीछे कहते हैं आमीन। उस का यह अर्थ है कि ऐसा होवे।

५९ पृथिवी।

पृथिवी के नाना देशों में हिन्दुस्तान एक देश है। पृथिवी अथवा भूमि कि जिस पर हम रहते हैं सो नारंगी की सूरत पर गोलाकार है। पर वह बहुत बड़ा गोला है इस लिये

वह हमें गोल नहीं परन्तु चपटी देख पड़ती है जहाज़ जो पूरब से सीधे पच्छिम को अथवा पच्छिम से सीधे पूरब को समुद्र पर चले जाते हैं सो साम्हने ही चलते चलते अन्त में फिर उसी स्थान पर पहुंचते हैं जहां से वे चले थे। इस से जाना जाता है कि पृथिवी एक बड़ा गोला है कि जिस के गिर्द में वे जहाज़ घूम गये। जैसा चन्द्रमा आकाश में घूमता है वैसा ही पृथिवी आकाश में घूमती रहती है और वह किसी वस्तु के ऊपर टिकी हुई नहीं है।

समुद्र का पानी पृथिवी के बड़े भाग को ढांपे हुए है। समुद्र का पानी खारा है। जहाज़ समुद्र पर चलते हैं।

पृथिवी के चार महाद्वीप हैं अर्थात् यूरोप और असिया और आफ्रिका और अमेरिका। हिन्दुस्तान देश जो है सो असिया के महाद्वीप में है। और इंगलंड अर्थात् अंगरेज़ देश यूरोप के महाद्वीप में है।

---

## ६० लड़का और उस की लिखाई।

एक दिन में ऐसा हुआ कि किसी मेमसाहिब: को एक छोटा लड़का मिला जो स्कूल से

चला आता था। उस के हाथ में कागज था जिस पर वह लिखा करता था।

मेमसाहिबः बोलीं कि तुम मुझे अपना कागज दिखाओ। लड़के ने जवाब दिया कि बहुत अच्छा मेमसाहिबः आप देखिये। मेमसाहिबः ने उस को देखके कहा कि वाह यह बहुत साफ है इस में सियाही की एक भी छींट नहीं है।

लड़का बोला कि मेमसाहिबः सियाही की छींटें तो थीं परन्तु मेरा शिक्षक जहां कहीं उन्हें देखता है छील छीलके मिटा देता है। लड़का सच्चा था और वह नहीं चाहता था कि मेरे काम को अच्छा कहें जब कि मैं ने उस को अच्छा किया ही नहीं है।

लड़को जान रखो कि किसी को धोखा देना झूठ बोलने के समान है।

## ६१ चील। Kite

चील दूसरे जीव जन्तु को अपना आहार करती है। उस की चोंच टेढ़ी है और उस के पंजे बहुत नोकीले होते हैं।

उस के लंबे लंबे पंख होते हैं और वह बहुत



ऊंचा उड़ती और मंडलाती रहती है। ऊपर से वह नीचे को देखती है कि कहां मेरा आहार पड़ा है। यदि वह मेंडक को अथवा मुर्गी के बच्चे को कहीं देख पाती है तो वह तीर के समान उस पर गिरती और झपट्टा मारके ले जाती है। यदि वह नीचे कोई हड्डी वा और कोई खाने की बस्तु पड़ी देखती है तो उस को भी उठा लेती है। जो उन की ओर को कोई गोश्त की बोटी फेंके तो वे ऐसी जल्दी से झपटके ले लेती हैं कि बोटी भूमि पर गिरने नहीं पाती।

चील पेड़ों के ऊपर अपना घोंसला बनाती है।

## ६२ रुपैया पैसा।

हम रुपैया पैसा देके कुछ मोल लेते हैं।

जो रुपैया पैसा न होता तो कोई बस्तु के पाने के लिये दूसरी बस्तु को उस के बदले में देना होता पर इस में बड़ा बखेड़ा होता।

चांदी से रुपैये और तांबे से पैसे बनाते हैं। एक आने में चार पैसे अथवा बारह पाइयां होती हैं। और एक रुपैया में सोलह आने होते हैं।

चांदी तो तांबे से महंगी होती है क्योंकि तांबा बहुत है और चांदी थोड़ी। चांदी से हां सब धातों से महंगमोला सोना है। लोहा सब धातों से बड़े काम का है।

रुपैये पैसे से बहुत काम तो निकलता है पर उन की लालच बुरी है। रुपैया को पाने के लिये लोग कभी कभी बहुत बुरे काम करते हैं। जो हम अपने रुपैये पैसों को अच्छे काम में लगाते होवें तो बहुत अच्छी बात है।

ज्ञान को प्राप्त करना कुन्दन से कितना ही उत्तम है।

---

## ६३ कूए में गिरी हुई लोमड़ी।

कोई लोमड़ी एक गहिरे कूए में गिरी। उस ने अपने पंजों से कूए की दीवार की ईंटें



पकड़ रखो और इस से थोड़ी देर तक अपने सिर को पानी के ऊपर उठाये रहो। एक भेड़िये ने आके ऊपर से कूए में झांका। लोमड़ी ने उसे देखके कहा तुम जल्दी से रस्सी लाओ और मुझ को कूए से निकालो मैं तो मरने पर हूं। भेड़िये ने उत्तर दिया कि हे प्रिय तुझ को ऐसी दशा में देखके मुझ को बड़ा दुःख होता है। तू यहां कब गिरी है? लोमड़ी ने कहा कि बातें मत करो और खड़े होके तमाशा मत देखो पर जाके मेरे बचाने का कुछ यत्न करो।

दया की बातों से दया के काम कहीं उत्तम हैं।

---

## ६४ दूसरों से हमें क्या करना चाहिये।

प्रभु ईसा मसीह की यह आज्ञा है कि जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम से करें तुम

भी वैसा ही उन से करो। परमेश्वर की दो बड़ी आज्ञा हैं। उन में दूसरी बड़ी आज्ञा यह है कि जैसे तू आप को प्यार करता है वैसे अपने पड़ोसी को प्यार कर।

तुम यह नहीं चाहते हो कि कोई तुम से कड़ी और बुरी बातें कहे। इस लिये तुम भी सभों से प्रेम और शीलता की बातें करो। तुम यह नहीं चाहते हो कि कोई तुम को मारे इस लिये तुम भी किसी को मत मारो। तुम यह नहीं चाहते हो कि कोई तुम्हारा कुछ चुरा लेवे इस लिये तुम भी किसी का माल मत चुराओ। जब तुम दुःख में हो तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारी सहायता करे इस लिये तुम भी उन की जो दुःख में हैं सहायता करो।

सब मनुष्यों के बिषय में सच्ची बातें कहो। सब लोगों से भलाई करो। सब मनुष्यों पर और सब पशु पक्षियों पर दया करो। तब तुम आप ही आनन्दित होगे और सब लोग तुम से प्रेम रखेंगे।

जैसा तुम अपने लिये कराने चाहते हो वैसा ही दूसरों से करो।

## ६५ भला चंगा रहने का भेद।

जो तुम यह चाहते हो कि हम निरोग और बलवान् हो जावें और हो रहें तो मेरी यह बातें माना।

निर्मल हवा की सांस लो। जो तुम छोटी कोठरी में जिस में निर्मल हवा न हो बैठते वा सोते हो तो तुम भले चंगे न रहोगे।

ऐसा खाना खाओ जो तुम को औगुण न करे और निर्मल पानी पिया करो। कच्चा फल और बहुत मिठाई खाने से लड़के बीमार होते हैं।

अपनी देह और अपना कपड़ा साफ रखो। अपने घर की दीवारों को और नीचे की भूमि को लीपा पोता करो। और अपने घर के पास ही पानी को ठहरने न दो।

जहां भूमि गीली हो वहां अपनी चारपाई मत बिछाओ और वहां मत सोओ। जो कपड़ा भीग गया तो उस को पहिने मत रहो। उस को उतारके सूखा कपड़ा पहिन लो। प्रतिदिन मैदान में कुछ खेला करो अथवा हवा खाने जाया करो।

सांझ को बहुत देर तक जागते न रहो पर जल्द सो जाओ और भोर को सवेरे उठो ६ भोर को और सांझ को परमेश्वर से यह प्रार्थना करो कि अपनी आशीष का हाथ तुम पर रखे।

## ६६ थप्पड़ के बदले थप्पड़ मत मारो।

एक दिन ऐसा हुआ कि बहुत से गाय बैल किसी गोशाले में बन्द थे। सब तो पहिले चुप चाप खड़े थे पर एक गाय ने जो अपना सिर घुमाया तो उस की सींग दूसरी गाय के लग गई। इस से उस गाय ने एक दूसरी गाय को लात मारी और फिर इस ने किसी और को लात मारी और तब ऐसा हुआ कि थोड़ी देर में वे सब गायें बड़ी रिस से एक दूसरे को लात मारने लगीं सो बड़ी लतमारी हुई।

वैसा ही कितने घरानों में बार बार होता है। जब कोई एक कड़ी बात कहता है इस से दूसरा भी रिसियाके कड़ी बुरी बातें कहने लगता है और थोड़ी देर में बड़ा झगड़ा और बखेड़ा घर में हो जाता है।

लात के बदले लात मत मारो और न थप्पड़ के बदले थप्पड़।

इस से तुम आप को और औरों को बहुत से दुःख से बचाओगे।

## ६७ मछलियां।

मछलियां पानी में रहती हैं। उन में और भूमि के ऊपर के पशुओं में बड़ा भेद है। उन को न टांगें हैं और न पैर पर वे अपनी पूंछ और परों के बल से चलती हैं। उन की देह लंबी है जिस्तें सहज से पानी में तैर सकें। कितनी मछलियों की देह छिलकों से ढंपी होती है। उन की हड्डियां सुफेद और नरम हैं और उन का लहू छूने से ठंढा लगता है।

मछलियां सांस भी लेती हैं पर जैसा हम लेते हैं वैसा नहीं। वे पानी में अपने गलफड़ों से सांस लेती हैं। जो तुम मछली को पानी से बाहर निकालो तो वह थोड़ी देर में मर जावेगी।

मछलियां सुन भी सकती हैं। कितनी जगहों में ऐसा होता है कि लोग मछलियों को घंटी की झंकार पर ऐसा सधा लेते हैं कि जब उन के खिलाने के समय घंटी बजाते हैं तो वे झुंड की झुंड एकट्ठी हो जाती हैं।

मछलियां अण्डों से उपजती हैं वे अगणित अण्डे देती हैं और इसी कारण बहुत मछलियां होती हैं ।

बहुत प्रकार की मछलियां खाई जाती हैं । कितनों को ऐसा ही पकाकर खाते हैं और कितनों को नमकीन करके पकाते और खाते हैं ।



६८. मसीह का प्यार लड़कों से ।

जब प्रभु ईसा मसीह धरती पर था तब एक दिन ऐसा हुआ कि कितने मा बाप अपने बाल बच्चों को उस के पास लाये कि वह अपने हाथ उन पर रखके उन्हें आशीष देवे ।

कई एक सियाने आदमी जो पास खड़े थे माओं से बोले कि तुम अपने लड़के प्रभु ईसा के पास मत लाओ और उसे दुःख मत दो। पर प्रभु ने कहा छोटे लड़कों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत बरजो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। फिर उस ने लड़कों को अपनी गोद में लिया और उन्हें आशीष दिई।

प्रभु ईसा मसीह अब स्वर्ग में है पर वह भूमि पर भी है। वह परमेश्वर भी है और मनुष्य भी है। जो तुम बहुत धीमी बाणी से उस से बोलो तौभी वह तुम्हारी सुन लेगा। जो तुम अपने मन ही मन में उस का स्मरण करो तौभी वह जान लेगा। वह हर घड़ी नित्य नित्य तुम्हारे पास ही है। उस दयालु प्रेमी प्रभु से यह बिन्ती करो कि तू मेरा महा-मित्र और मुक्तिदाता हो। तुम अपने तईं ईसा को दे दो। उस से यह बिन्ती करो कि हे प्रभु जैसा तू धर्म्मी और दयावान् है वैसा मुझे भी कीजिये और सदा लों मेरी रक्षा कीजिये।

## ६९ ताड़ का पेड़ और बेल।

एक बेल किसी ताड़ के पेड़ पर लिपटते

लिपटते चढ़ गई और महीने भर में उस की चोटी तक पहुंच गई।

बेल ने ताड़ से पूछा तुम कितने बरस के पेड़ हो।

ताड़ ने जवाब दिया कि सौ एक बरस का पेड़ हूं।

बेल फिर बोली कि वाह सौ बरस के पेड़ और इस से अधिक न बढ़ सके। देखो मुझ को मैं सौ दिन की भी नहीं हुई और तुम्हारे बराबर ऊंची हो गई।

ताड़ ने कहा कि हां मैं जानता हूं। हर बरस में तुम्हारे बराबर कोई न कोई बेल मुझ को पकड़के चढ़ गई और तुम्हारे बराबर बढ़ा बोल बोली। और वह जल्द फिर मुरझा गई ऐसा तू भी जल्द मुरझा जायेगी।

जल्द बढ़ा जल्द सड़ा।

## ७० हम सब आपस में भाई हैं।

एक बाप के बेटा बेटी आपस में भाई बहिन होते हैं। अच्छा बाप यह चाहता है कि मेरे लड़के बाले आपस में एक दूसरे को प्यार करें। और यदि वे आपस में झगड़ा करें

और एक दूसरे को बुरा कहें तो उस को दुःख होता है। हम सभों का भी एक ही जगत्पिता स्वर्ग में है क्या एक ही परमेश्वर ने हम सभों को नहीं सृजा।

हम सब एक ही पहिले मा बाप से अर्थात् आदम और हव्वा से उत्पन्न हुए हैं।

फरंगिस्तान और हिन्दुस्तान के लोगों के पुरखे पहिले पहिल एक संग रहते थे रंग में भी बराबर थे और एक ही बोली बोलते थे। उन में से जो फरंगिस्तान के ठंढे देशों में जाके बस गये सो होते होते गोरे हो गये। और जो गरम देशों में जाके बस गये सो होते होते काले हो गये। तब उन के अलग अलग होने से उन की बोलियां भी अलग अलग हो गईं।

भिन्न भिन्न की जातिपांतियों का बखेड़ा परमेश्वर की ओर से नहीं है। उस ने सब मनुष्यों की देह एक सी बनाई और उन को एक ही से हाथ पैर दिये। उस ने हम सभों को एक ही प्रकार का आत्मा दिया कि उस को जानें और प्यार करें। हम सब भाई हैं और चाहिये कि हम भाइयों के समान आपस में एक दूसरे को प्यार करें। जो हम ऐसा करते

तो निःसन्देह-यह जगत बैकुंठ के समान हो जाता ।

## ७१ काम कैसा करें और कैसा न करें ।

गोपाल नामे एक लड़का अपनी स्लेट कांख में लिये हुए स्कूल से चला आता था । किसी भलेमानुष ने उस से पूछा कि गोपाल कहो क्या तुम को हिसाब करना अच्छा लगता है ।

उत्तर दिया कि बहुत अच्छा नहीं लगता है ।

तुम्हारे हिसाब का काम कैसे चलता है ।

चलता तो है क्योंकि मैं रामचरण से अपना हिसाब करवा लेता हूं ।

तुम अपना खाना आप ही खाते हो । जो वह तुम्हारा काम करता है तो चाहिये कि तुम आप न खाओ पर अपना खाना उसी को दे दो ।

मैं बिना खाना खाये क्योंकर जी सकता हूं ? जो कुछ न खाऊं तो मैं बढूंगा नहीं ।

सच कहते हो इसी रीति से तुम्हारी बुद्धि और विद्या भी जो उन से तुम काम नहीं लोगे और उन्हें नहीं पालोगे तो वे भी नहीं बढ़ेंगी । जो रामचरण तुम्हारा काम करता है तो वह तुम्हारा खाना क्यों न खावे ।

## ७२ सूर्य्य और चन्द्रमा ।

सूर्य्य से हम को उजियाला मिलता और गरमी भी । जो सूर्य्य न होता तो सब स्थानों में अंधेरा और ठंढा होता और कोई पेड़ न उगता और न जगत् भर में कोई जीव जन्तु रहता ।

पृथिवी से सूर्य्य बहुत ही बड़ा है । वह हम से दूर है इस लिये छोटा दिखाई देता है । सूर्य्य आकाश में नहीं चलता । पृथिवी एक रात दिन में एक बार घूम जाती है इस से रात और दिन हुआ करता है । जब हमारे यहां दिन होता है तो पृथिवी की दूसरी ओर रात होती है ।

चांद रात में उजियाला देता है । उस की ज्योति सूर्य्य की ज्योति से कम है । चांद अपने आप में कुछ प्रकाश नहीं रखता पर सूर्य्य के प्रकाश से वह प्रकाशमान हो जाता है । चांद में इस धरती के समान पत्थर और पहाड़ हैं पर उस में पानी नहीं है ।

इस धरती से चांद कहीं छोटा है । महीने भर में वह धरती की चारों ओर एक बार घूम जाता है ।



## ७३ छेड़छाड़ । *

बलदेव ने दयाराम को उदास देखके उस से कहा तुम क्यों उदास हो ? तुम कहां गये थे ।

दयाराम ने उत्तर दिया मैं खेलने को गया था पर ताराचंद आके बोला कि तुम यहां मत खेलो ।

बलदेव । क्या तुम ने कुछ उस से कहा था ।

दयाराम । कुछ नहीं कहा था वह मुझ को जहां तक उस से हो सकता कभी खेलने नहीं देता है ।

बलदेव । वह किस कारण तुम से ऐसा करता है ।

दयाराम । वह मुझ से चार बरस बड़ा है । इस लिये बोलता है अरे कुटके मुटके चला जा तुझ को कौन देखने चाहता है ।

बलदेव । क्या तुम को सुरत नहीं है कि दो चार दिन हुए जब गोबिंद तुम से खेलने चाहता था तब तुम ने उस को रोलाया ।

दयाराम । हां पर वह तो छोटा लड़का है ।

बलदेव । जितना तुम गोबिंद से बड़े हो

---

* इस पाठ को दो लड़के ऐसा पढ़ें कि जैसा एक बलदेव हो और एक दयाराम ।

क्या इस से अधिक ताराचंद तुम से बड़ा नहीं है ।

दयाराम । हां है ।

बलदेव । फिर तुम ताराचंद को बुरा जानते हो कि वह तुम को छेड़ता है ।

दयाराम । कोई लड़का उसे नहीं चाहता है ।

बलदेव । तब तुम उस के समान काम मत करो । तुम छोटे लड़कों से प्रेम और मिलनसारी रखो और सभों से मिलनसारी की बातें करो तब सब तुम से प्रेम रखेंगे ।



## ७४ गुलाब ।

गुलाब के फूल को कभी कभी फूलों का राजा कहते हैं क्योंकि ऐसा कोई फूल नहीं

जिस को सुन्दरता और सुगन्धता उस के बराबर होवे ।

नाना प्रकार के गुलाब हैं । बहुत से ऐसे पेड़ हैं जिन के फूल लाल हैं और बहुत ऐसे भी हैं जिन के सुफेद हैं । पेड़ में बहुत कांटे होते हैं । जंगली गुलाब भी हैं पर उन के फूल फुलवारी के गुलाब के फूलों से छोटे होते हैं ।

कितने देशों में गुलाबों के खेत के खेत हैं ।

गुलाब का इतर बड़ा सुगन्धी इतर होता है । उस को ऐसे बनाते हैं कि फूलों को पानी में आग के ऊपर चढ़ाते हैं और बर्त्तन को ढांकते हैं । इसी पानी को रात के समय उथले बड़े बर्त्तनों में खुला रखते हैं । तब इधर उधर पानी के ऊपर गुलाब का इतर तेल की बूंदों के समान निकल आता और उतराता है । यही गुलाब का इतर है । वह बहुत महंगमोला है क्योंकि एक बूंद बहुत से फूलों में से निकलती है ।

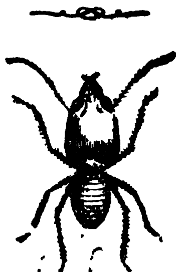
परमेश्वर ने हमारे आनन्द के लिये गुलाब को ऐसा सुन्दर बनाया ।

## ७४ एक मगन कंगाल पुरुष ।

किसी छोटे लड़के ने एक कंगाल पुरुष को बहुत आनन्दित देखके पूछा कि बाबाजी आप तो बहुत बूढ़े और लंगड़े और कंगाल हैं आप क्योंकर सदा मगन रहते हैं। बूढ़े ने जवाब दिया कि बच्चा मेरा एक बड़ा मित्र है जो मुझ को सदा प्यार किया करता है और मैं उसे प्यार करता हूं और जानता हूं कि वह मुझे कभी न छोड़ेगा न मुझे त्याग देगा। यह जानके मैं क्योंकर सब बातों में मगन न होऊं। परमेश्वर मेरा महामित्र है। मैं जानता हूं कि सारी बस्तें उन की भलाई के लिये जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं मिलके लाभदायक होती हैं। और जब मैं इस जगत से सिधारूं तब मेरा यह भरोसा है कि मैं सदाकाल उस ही के साथ रहूंगा और तब मेरी मगनता पूरी हो जावेगी।

यह तो एक बड़ा पदार्थ है कि हमारा कोई मित्र हो जो हमें प्यार करता है और जिसे हम भी प्यार कर सकते हैं जो हर समय हमारी रक्षा और भलाई करने चाहता और कर सकता भी। ऐसा तो कोई मित्र इस जगत में नहीं

है कि जिस के बिषय में यह सब बातें कह सकें क्योंकि कभी कभी वे चले जाते हैं अथवा उन का मन और ही हो जाता है अथवा वे हमें भूल जाते हैं। और जो हमारे अति प्यारे हैं उन को भी जब हम मर जायेंगे छोड़ना पड़ेगा। पर महान् परमेश्वर हमारा ऐसा महामित्र है जैसा हमें चाहिये हो सकता है। बिचार करो कि वह तुम्हारा भी मित्र है कि नहीं।



## ७६ योधा चीऊंटा।

चीऊंटा बहुत काम करनेवाला और छोटा जन्तु है। जो उस के बिल के पास जाओ तो देखोगे कि कोई कोई तो खाने के खोज में दौड़ता फिरता है और कोई कोई ऐसे बड़े कोड़े पतंगों को खींच रहा है जो उन से भी बड़े हैं। कधी कधी देखने में आता है कि वे

छोटी छोटी सुफेद बस्तें लिये हुए आते हैं। यह उन के अंडे हैं जिन की वे बड़ी चौकसी करते हैं। कितने उन में से ऐसे हैं जो सिपाही का काम करते हैं और कितने काम करनेहारे हैं।

एक प्रकार की पीली चीऊंटियां हैं जो अपने साथ एक छोटा कीड़ा ऐसे काम के लिये रखती हैं जैसा हम गाय रखते हैं। वे उन को पालती हैं और उन में से एक प्रकार का रस चूसती जिस से वे बहुत प्रसन्न होती हैं।

चीऊंटियां बड़े काम की होती हैं। वे मरे जीव जन्तुओं को खा लेती हैं। जो वह उन्हें खा न लें तो उन के सड़ने से दुर्गन्ध निकले कि जिस से लोग बीमार हो जावें।

सुलेमान जो एक महाज्ञानी राजा था उस ने कहा है हे आलसी चीऊंटी के पास जा उस के मार्गों को बूझ और बुद्धिमान हो। जैसा वह खाना बटोरने के लिये बड़ा परिश्रम करती है वैसा ही हम लोगों को ज्ञान और बिद्या पाने के लिये यत्न करना उचित है।

## ७७ चोरी करना ।

यह दो जन अर्थात् हरसहाय और बिहारी के बीच में प्रश्न और उत्तर की रीति पर बातचीत है ।

हरसहाय । देखो मेरा कैसा अच्छा चाकू है ।

बिहारी । हां अच्छा है । तुम को किस ने दिया ।

हरसहाय । किसी ने नहीं दिया । मैं ने उसे गोपाल की थैली में से निकाल लिया ।

बिहारी । तब तुम ने चोरी किई और तुम चोर हो गये ।

ह० । चोर तो नहीं हो गया मैं ने केवल उस की थैली में से ले लिया ।

बि० । क्या गोपाल ने कहा था कि उसे ले लो ।

ह० । यह तो नहीं कहा वह तो था नहीं वह जानता नहीं कि मैं ने लिया है । जो मुझे कोई बस्तु चाहिये क्या उस को लेना बुरा है ।

बि० । हां वह तो बुरा है । जो मैं तुम्हारी टोपी वा तुम्हारी पुस्तक ले लेता क्या तुम उस को अच्छा कहोगे ।

ह० । सो नहीं क्योंकि वे तेरा मेरी हैं और तुम हमारा जो कुछ है न लेना ।

बि० । फिर जो गोपाल का माल है सो तुम क्यों लेते हो । परमेश्वर ने जो आज्ञा दिई है कि तू चोरी न करना क्या तुम ने वह नहीं पढ़ी ।

ह० । वह चाकू मुझे फेर दो । मैं उसे गोपाल की थैली में फिर डाल दूंगा । मैं फिर चोरी न करूंगा ।

---

## ७८ बीमार हाथी ।

किसी हाथी की आंखें आई थीं और तीन दिन तक वह कुछ भी देख न सका । उस के मालिक ने एक वैद्य से पूछा कि तुम इस बेचारे की आंखें अच्छी कर सकते हो । उस ने उत्तर दिया कि मैं देखूंगा । जैसी औषध मैं मनुष्यों की आंखें के लिये देता हूं वैसी ही इस को भी दूंगा । हाथी को तब लिटा दिया और वैद्य ने उस की आंखें में कुछ औषध टपका दिई । इस से उस को पहिले बहुत पीड़ा हुई यहां तक कि दुःख के मारे वह गरज उठा ।

लेकिन औषध का गुण बहुत अच्छा था कि थोड़ी देर में उस की आंखें थोड़ी थोड़ी खुलने लगीं ।

दूसरे दिन जब वह वैद्य फिर आया और हाथी ने उस की बोली पहिचानी तो वह आप से आप लेट गया और अपने सिर को एक ओर झुका दिया और अपनी सूंड़ को लपेट लिया और अपने स्वास को थाम रक्खा जैसा कि कोई पुरुष हीर धीर करके अपने को ऐसा संभाले कि मैं पीड़ा को सहूं । जब दोनों आंखों में औषध टपकाई गई तब उस ने आनन्द से एक लंबी सांस खींची और अपनी सूंड़ के हिलाने से ऐसा दिखाया कि जैसा वैद्य से बोले कि मैं आप को सलाम करता हूं ।

## ७९ पानी ।

जब पानी निर्मल होता है तब उस का न रंग है न गन्ध है और न उस में किसी प्रकार का स्वाद होता है । वह पीने और नहाने धोने और खाना पकाने के लिये बड़े काम का होता है । मेंह का पानी जो भूमि पर गिरता है उस से घास पेड़ और फूल बढ़ जाते

हैं। जो पानी न होता तो यह सारी धरती सूनी हो जाता।

सूर्य्य अपनी गरमी से पानी को सोख लेता है और वह माफ होके उड़ता जाता और मेघ बन जाता है। फिर वही पानी मेंह होके पृथिवी पर गिरता अर्थात् मेंह बरसता है। नदियां तो समुद्र में बह जाती हैं पर समुद्र इस से अधिक भर नहीं जाता है क्योंकि सूर्य्य बहुत पानी फिर सोख लिया करता है। जब बहुत ठंढ पड़े तो पानी जमके बरफ हो जाता है और वह बिल्लौर के टुकड़े के समान करा और निर्मल हो जाता है।

गंदे अथवा सड़े पानी से बीमारी होती है कूओं और तालाबों को साफ रखा चाहिये। पेड़ के पत्ते इन में गिरने और सड़ने न पावें नहीं तो पानी बिगड़ जायेगा।

## ८० अभी सुसमय है।

लड़के लड़कियां और जो थोड़ी उमर के लोग हैं उन का बार बार यह दस्तूर है कि जो अब करना है उसे कहते हैं कि पीछे करेंगे। जब तक हम उमर में कम हैं तब तक

समय के पदार्थ को नहीं जानते हैं। समझते हैं कि अब तो पढ़ने सीखने का बहुत समय है। जब तक बूढ़े होवें तब तक ज्ञानवान् और बुद्धिमान हो जायेंगे। पर जब लड़कपन बीत गया और हम बड़े हो गये और अधेड़पन को पहुंचे तब देखते हैं कि ऐसे पढ़ने और सीखने के योग्य नहीं रहे कि जैसा लड़कपन में थे।

इस लिये जो कुछ आज कर सकते हो सो कल के लिये मत रख छोड़ो। जो तुम ज्ञान और विद्या प्राप्त करने चाहते हो तो अभी उसे ढूंढ़ो क्योंकि अब सुसमय है।

जो तुम चाहते हो कि जब मैं जवान हो जाऊं और उमर में बड़ा हो जाऊं तब लोग मुझे प्यार करें और मेरा आदरमान करें तो अभी इस का उपाय करो क्योंकि अभी सुसमय है।

कालिह करे सो आज कर, आज करे सो अब्ब।
पल में परलय होयगी, फेर करेगा कब्ब॥

## भोर की प्रार्थना।

हे प्रभु धन्य धन्य तुझ को होवे कि तू ने बीती हुई रात में मेरी रखवाली किई और कि इस भोर में मैं जीता और भला चंगा हूं। मैं पापी हूं और बार बार मैं ने बुरा किया है। प्रभु ईसा मसीह के कारण तू मेरे सारे पापों को क्षमा कर और पविचात्मा मुझ में एक पवित्र मन को उत्पन्न करे। इस दिन भर में तू मेरी रक्षा कर और जो धर्म के कर्म हैं सो मुझ से करवा। मेरे नाते गोते के लोगों भाई बंद और कुटुंब पर तू अपनी आशीष का हाथ रख और ऐसा कर कि लोग तुझ को जानें और प्यार करें। प्रभु ईसा मसीह के लिये मेरी प्रार्थना सुन ले और ग्रहण कर। आमीन।

## सांझ की प्रार्थना।

हे प्रभु इस रात के समय तू मेरे ऊपर दया की दृष्टि कीजिये। जितने मेरे अपराध इस दिन में हुए हैं सो प्रभु ईसा मसीह के कारण से क्षमा कर। पविचात्मा प्रभु ईसा मसीह का ज्ञान मुझे देवे और मुझे पवित्र करे। अपने

घर के लोग और भाई बंद मैं तेरे हाथ में सौंपता हूं। तू सब लोगों पर दया कर। इस रात में तू मेरी रखवाली कर। जब तक मैं जीऊं तब तक तेरी सहायता से तेरे मार्ग पर चला करूं और जब मरूं तो मेरा आत्मा तेरे पास जावे और तेरे संग नित नित आनन्दित रहे। यह सारी बिन्ती मैं प्रभु ईसा मसीह का नाम लेके तुझ से मांगता हूं। आमीन।

## वह प्रार्थना जो ईसा मसीह ने अपने शिष्यों को सिखाई।

हे हमारे स्वर्गबासी पिता तेरा नाम पवित्र किया जाय। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में वैसी पृथिवी पर पूरी होय। हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे। और जैसे हम अपने ऋणियों को क्षमा करते हैं तैसे हमारे ऋणों को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्ट से बचा। क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे हैं। आमीन।

## खाने पर प्रभु की आशीष मांगना ।

हे प्रभु इस भोजन पर जो तू ने मुझे दिया तेरी आशीष होवे । और तू मेरी आत्मा को भी जीवन की रोटी खिला । प्रभु ईसा मसीह के द्वारा से । आमीन ।

## खाने के पीछे प्रभु का धन्य मानना ।

धन्य धन्य हे प्रभु इस भोजन के लिये जिस से तू ने मुझे सन्तुष्ट किया है । incline
अपने प्रेम और सेवा में मुझे लौलीन रख । प्रभु ईसा मसीह के द्वारा से । आमीन ।

समाप्ति ।



PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS:—1885.

# VERNACULAR SCHOOL BOOKS

OF

*The Christian Vernacular Education Society.*



## Urdu.

| | | Rs. | A. | P. |
|---|---|---|---|---|
| First Book, Arabic Character, | .. .. | 0 | 1 | 0 |
| ————Persian Character, | .. .. | 0 | 1 | 0 |
| ————Roman Character, | .. .. | 0 | 1 | 0 |
| Second Book, Arabic Character, | .. .. | 0 | 2 | 0 |
| Third Book, do., | .. .. | 0 | 3 | 0 |
| Zenana Reading Book, Arabic Character, | | 0 | 4 | 0 |
| —————— Persian do. | .. | 0 | 4 | 0 |
| Geographical Primer, | .. .. | 0 | 3 | 0 |



## Hindi.

| | | Rs. | A. | P. |
|---|---|---|---|---|
| Primer, (The Simple Letters,) | .. .. | 0 | 0 | 3 |
| First Book, | .. .. | 0 | 1 | 0 |
| Second Book, | .. .. | 0 | 2 | 0 |
| Third Book, | .. .. | 0 | 3 | 0 |
| Fourth Book, | .. .. | 0 | 6 | 0 |
| Zenana Reading Book, Revised Edn., | .. | 0 | 4 | 0 |
| A. L. O. E's Zenana Reader, (Strí Darpan) | | 0 | 2 | 0 |
| Geographical Primer, | .. .. | 0 | 3 | 0 |